46

बीच हवा में पुलपिट

(14:6-13)

वर्षों से मैंने अलग-अलग स्थानों में प्रचार किया है: चर्च बिल्डिंगों में, घरों में, दफ्तरों में, खेल के मैदान में, खुले आसमान में और जहाज़ के डेक पर। परन्तु मैंने कभी हवा में ऊंचाई से प्रचार नहीं किया। 14:6-13 वाले दर्शन में यूहन्ना ने आकाश में उड़ते तीन स्वर्गदूत देखे, तीनों के पास परमेश्वर का विशेष संदेश था।

मेमने के शत्रुओं तथा क्रोध के सात कटोरों के उण्डेले जाने के परिचय के बीच स्वर्गदूत विशेष दर्शनों का भाग हैं। अध्याय 14 के अन्य दर्शनों की तरह तीनों स्वर्गदूतों का उद्देश्य कठिन परीक्षाओं का सामना कर रहे मसीही लोगों को शांति देना था।[1]

मेरे प्रचार करते समय कई लोग सो जाते हैं, परन्तु बीच हवा से संदेश सुनाए जाने के समय मैं कहूंगा कि कोई सोए न।[2]

अच्छी खबर (14:6, 7)

वचन आरम्भ होता है, ''फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा'' (आयत 6क)। 8:13 वाले उकाबों की तरह स्वर्गदूत ''आकाश में'' ऐसे उड़ रहा था कि सब उसे देख सकते थे। ''एक और'' शब्द का कोई विशेष महत्व नहीं है;[3] यह तो केवल सेवा के लिए बुलाए गए परमेश्वर के दूतों में से एक था।

स्वर्गदूत के पास ''सुनाने के लिए सनातन[4] सुसमाचार था''(आयत 6घ)।[5] प्रकाशितवाक्य में ''सुसमाचार'' शब्द केवल यहीं पर मिलता है।[6] कुछ लेखक इस सुसमाचार को उस सुसमाचार से जो नये नियम में और जगहों पर है, अलग करने की कोशिश करते हैं, परन्तु यह विश्वास करने का कि यह कोई और सुसमाचार है, कोई कारण नहीं है।[7] जैसा कि मायर पर्लमैन ने ज़ोर दिया है, ''[सुसमाचार] केवल एक ही है।''[8] जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स ने लिखा है:

> [प्रकाशितवाक्य 14 का] सनातन सुसमाचार कोई नया सुसमाचार या बाद का प्रकाशन नहीं है।[9] यह मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान (1 कुरिन्थियों 15:1-4) का वही सुसमाचार है, जो एक लाख चवालीस हज़ार लोगों को दिया गया था और जो सब लोगों को सुनाया जाना था (लूका 24:47)।[10]

सुसमाचार को ''सनातन'' कहा गया, क्योंकि यह परमेश्वर की सनातन योजना का

भाग था (इफिसियों 3:8-11)। ''परमेश्वर का सुसमाचार न तो उसके मन में बाद में आया विचार है और न इतिहास की लम्बी पत्री पर बाद में लगाया गया लेख।''[11]

स्वर्गदूत के शुभ समाचार का संदेश ''पृथ्वी पर के रहने वालों'' (आयत 6ख), अर्थात उनके लिए था, जिनके मन सांसारिक बातों पर लगे हुए थे। उन्होंने कालांतर में परमेश्वर के प्रेम के प्रस्तावों को ठुकरा दिया था, परन्तु परमेश्वर उन्हें एक और अवसर दे रहा था। ऐसा करके परमेश्वर ने किसी का पक्षपात नहीं किया: ''हर एक जाति, और कुल और भाषा'' (आयत 6ग) के लिए परमेश्वर की बातें थीं।[12]

पृथ्वी के रहने वालों से ''ऊंचे स्वर से''[13] बात करते हुए स्वर्गदूत ने पहले तो आज्ञा दी कि ''परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो'' (आयत 7क)। बुद्धिमान ने कहा है, ''... अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर ...'' (सभोपदेशक 12:13)। लोगों के लिए कैसर से डरने और उसकी महिमा करने के बजाय परमेश्वर से डरना और उसकी महिमा करना आवश्यक था।

स्वर्गदूत ने यह भी कहा कि सब लोग उसकी आराधना करें ''जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए''[14] (आयत 7ग)। बड़ी-बड़ी बातों की *डींगें* मारने वाले की मूर्ति की पूजा करने के बजाय उन्हें परमेश्वर की आराधना करनी आवश्यक थी, जिसने वास्तव में बड़े-बड़े काम *किए* थे।

कोई विरोध करते हुए कह सकता है, ''एक मिनट रुको! आप ने आयत 7 के बीच का भाग छोड़ दिया है, जिसमें स्वर्गदूत ने कहा कि 'पृथ्वी के रहने वाले' सच्चे परमेश्वर से डरें और उसकी आराधना करें 'क्योंकि उसके *न्याय* करने का समय[15] आ पहुंचा है' [आयत 7ख]। यह आयत कहती है कि स्वर्गदूत सुसमाचार सुना रहा था, परन्तु 'न्याय' की यह बात मुझे अच्छी खबर नहीं लगती!''

कुछ लोग सुसमाचार को गलत समझते हैं। उनके लिए इसका आरम्भ और अन्त क्रूस से ही हो जाता है, जो केवल परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताता है। यह सत्य है कि मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना सुसमाचार का सार हैं (1 कुरिन्थियों 15:1-4), परन्तु सुसमाचार में उस सुन्दर ''पुरानी कहानी'' से आगे भी है। वचन की तरह ही सुसमाचार भी दोधारी तलवार से तेज़ है (इब्रानियों 4:12); यह परमेश्वर के प्रेम की ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के न्याय की बात भी बताता है। शुभ समाचार के बीच में दुखद समाचार भी है कि यदि कोई सुसमाचार को ठुकराता है तो उसके परिणाम विनाशकारी हैं।[16]

यीशु ने कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24), और ''जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते'' (यूहन्ना 8:21)। फिर उसने कहा, ''यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे'' (लूका 13:3)। ग्रेट कमीशन देते हुए उसने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)। यूहन्ना को प्रेम का प्रेरित कहा जाता है, परन्तु उसने भी सिखाया कि ''जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है'' (यूहन्ना 3:36)।

थॉमस टॉरेंस ने कहा है, ''सुसमाचार का यह वह पहलू है जिसे हम भूल जाते हैं ... क्रूस की परछाईं। ...''[17] एच. एल. एलिसन ने लिखा है, ''परमेश्वर की सनातन प्रभुता को नकारने वाला क्रूस का संदेश सुसमाचार से कम ही है।''[18]

तौ भी कई बातों में स्वर्गदूत के वचन ''शुभ समाचार'' हैं। उसके वचन पृथ्वी पर रहने वालों के लिए शुभ समाचार थे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की ओर मुड़ने का एक और अवसर देने की घोषणा की गई थी। वे मसीही लोगों के लिए भी शुभ समाचार थे, क्योंकि वे इस बात का आश्वासन थे कि परमेश्वर के उद्देश्य टल नहीं सकते और न टलेंगे। एक लेखक ने इसे इस प्रकार कहा है:

> यह जानना अच्छी खबर है कि संसार में परमेश्वर के उद्देश्यों को परास्त नहीं किया जाएगा; यह अच्छी खबर है कि परमेश्वर अपने धर्मी कार्य को पापी लोगों के पांवों तले सदा तक लताड़ने की अनुमति नहीं देगा। फिर आनन्द इस बात पर नहीं है कि पापी लोग नाश होंगे, बल्कि इस पर है कि धर्मी जयवन्त होंगे। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि परमेश्वर का क्रोध भी उसके प्रेम की तरह ही पवित्र है और पवित्र लोग हों या पापी दोनों को यह पता होना चाहिए कि उसका विरोध करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।[19]

बुरी खबर (14:8)

पहले दूत द्वारा हवा के बीच पुलपिट छोड़ने पर दूसरा वक्ता उसकी जगह आ गया: ''इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया कि गिर पड़ा,[20] वह बाबुल गिर पड़ा ...'' (आयत 8क)। (पहला स्वर्गदूत, आकाश के बीच उड़ते हुए का चित्र देख।) यशायाह ने यह भविष्यवाणी करने के लिए कि सांसारिक बाबुल गिर पड़ेगा ये शब्द लिखे थे (यशायाह 21:9); यहां स्वर्गदूत ने उन्हें आत्मिक बाबुल के गिरने की भविष्यवाणी के लिए इस्तेमाल किया।

बड़े बाबुल का यह पहला उल्लेख है, जिसे विस्तार में अध्याय 17 और 18 में बताया जाएगा। अध्याय 17 में उसे एक सुन्दर परन्तु पीतल की स्त्री के रूप में पशु पर बैठे दिखाया गया है (आयत 3); स्पष्टतया वह उस अजगर से मिली हुई है। उसके माथे पर यह नाम लिखा हुआ है: ''भेद बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता'' (आयत 5)। अध्याय 17 तक जाने के लिए हम ''बड़े बाबुल'' पर मुख्य चर्चा को बचाकर रखेंगे,[21] परन्तु अपने अध्ययन में यहां कुछ शब्द कहने उचित हैं: ''अपनी विलासिता और नैतिक भ्रष्टता के लिए प्रसिद्ध बाबुल का पुराना मैसोपोटामिया नगर संसार के साम्राज्य की राजनैतिक और धार्मिक राजधानी बन गया था।''[22] बाबुल के साथ ''बड़ा'' जुड़ना नबूकदनेस्सर के घमण्ड का स्मरण कराता है: ''क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिए बसाया है?'' (दानिय्येल 4:30)। इस घमण्ड के बाद परमेश्वर ने घोषणा की थी कि राज्य नबूकदनेस्सर से ले लिया जाएगा (दानिय्येल 4:31)। अन्ततः मादा-फारसियों ने नबूकदनेस्सर

के वारिसों से राज्य छीन लिया। एल्बर्ट बाल्डिंगर ने टिप्पणी की है:

> कुस्तु के शासन में प्राचीन बाबुल का फारसियों के सामने गिरना ... इब्रानी सोच पर गहरा प्रभाव छोड़ गया और परमेश्वर के राज्य का विरोध करने वाले सभी अधिकारों, लोगों या संस्थाओं पर आने वाले अन्तिम विनाश का प्रतीक बन गया।[23]

आयत 8 की समीक्षा करते हुए इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें: ''गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा,[24] जिसने अपने व्यभिचार[25] की कोपमय मदिरा[26] सारी जातियों को पिलाई है।'' आइए ''वेश्याओं की माता'' की कुछ बातों को देखते हैं।

(1) ''बड़ा बाबुल'' स्पष्टतया परमेश्वर का शत्रु है। जैसा कि हम देखेंगे, वह उस अजगर अर्थात मसीही लोगों को धमकाने की कोशिश करने वाले पशु का तीसरा प्रतिनिधि है; झूठा भविष्यवक्ता मसीही लोगों को भरमाने की कोशिश करता है; बाबुल मसीही लोगों को *फुसलाने* की कोशिश करता है। अभी के लिए उसे प्रभु के मार्ग से दूर करने के प्रयास के किसी भी सांसारिक प्रभाव के रूप में पहचानना काफी है।[27]

(2) वह परमेश्वर से लोगों का ध्यान हटाने में सफल रही थी: उसने ''अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।'' यहां उदाहरण चरित्रहीन व्यक्ति का है, जो किसी से दुष्कर्म करने के लिए उसे मदहोश करने के लिए शराब पिलाता है। जैसा कि हमारे पिछले पाठ में ज़ोर दिया गया था, यह आयत मुख्यतया आत्मिक व्यभिचार (प्रभु से बेवफाई करना) की बात करती है, परन्तु इसमें शारीरिक व्यभिचार भी मिलता है।

(3) अन्ततः बाबुल ने नाश होना था। उसका प्रभाव और महत्व चाहे जितना भी था परन्तु अन्त में उसने गिर जाना था।[28] उसका विनाश इतना सुनिश्चित था कि स्वर्गदूत ने ऐसे बताया कि जैसे यह पहले ही हो चुका हो:[29] ''गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा।'' परमेश्वर के मार्गों के विरोध में चलने वाले लोगों की नीतियां अपने आप में ही विनाश के बीज लिए होती हैं।

परमेश्वर ने बाबुल के विनाश की घोषणा क्यों की? कुछ तो इसलिए कि वह बाबुल से प्रभावित अविश्वासियों को चेतावनी दे रहा था। कई लोग शुभ समाचार को तब तक नहीं सुनेंगे जब तक बुरी खबर अपने राह पर चलने से उन्हें रोकती नहीं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। पौलुस ने लिखा, ''इसलिए प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:11क)।

इससे भी स्पष्ट आयत 8 किसी भी मसीही के लिए, जो बाबुल की सुन्दरता और चमक से प्रभावित हो सकता था, चेतावनी थी। डगमगाने वाले किसी भी व्यक्ति को यह पता होना आवश्यक था कि यह बाबुल भी वैसे ही नष्ट होगा, जैसे मैसोपोटामिया में इसके जैसा प्राचीन नगर नष्ट हुआ था। इस सच्चाई पर चर्चा करते हुए, सुसमाचार के प्रचारक जॉन रिस्से ने कहा, ''क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को वोट देंगे, जो पहले ही हारा हुआ था?''[30]

उसका संदेश स्पष्ट था: किसी ऐसे व्यक्ति या प्रबन्ध का पक्ष क्यों लें, जिसका बाहर निकाला जाना पहले से ही तय है ?

आप ही चुनें[31] (14:9-13)

अच्छी खबर दी जा चुकी थी और बुरी भी। अब अन्तिम स्वर्गदूत के प्रकट होने का समय था। यूहन्ना के पाठकों के लिए यह निर्णय लेने का समय था।[32]

विश्वास रहित लोगों का भविष्य (आयतें 9-12)

तीसरे स्वर्गदूत ने न्याय की रूपरेखा देते हुए कहना आरम्भ किया: न्याय किसी पर भी आना था ''जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और माथे या हाथ पर उसकी छाप ले'' (आयत 9ख)।

दूसरे पशु (झूठे भविष्यवक्ता) ने ''पृथ्वी और उसके रहने वालों से उस पहले पशु की'' (13:12) और उसकी मूर्ति (13:15) की पूजा करवाई। उसने लोगों के ''दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप करा दी'' थी (13:16) और उसने ऐसा प्रबन्ध किया था कि ''उसे छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का अंक हो, अन्य कोई लेन-देन न कर सके'' (13:17)। इस प्रकार अध्याय 13 से हमें पशु की पूजा करने और उसके छाप लेने के *थोड़ी देर के* लाभ बताए।

आगे अध्याय 14 *दीर्घकालीन* परिणामों की रूपरेखा देता है: ''जो कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है'' (आयतें 9ख, 10क)। पशु के चिह्न वालों ने ''[बड़ी वेश्या की] पीड़ा में पड़ना था'' (14:8)। अब उन्होंने परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पीनी थी।[33] यह ''परमेश्वर के क्रोध की मदिरा कोपमय'' होनी थी;[34] यानी इसमें दया की एक बूंद भी नहीं मिलनी थी।

इस जीवन में दुष्ट से दुष्ट लोग भी परमेश्वर के अनुग्रह का लाभ उठाते हैं। ''वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है'' (मत्ती 5:45ख) परन्तु न्याय के दिन प्रभु की बात न मानने की ठानने वालों पर कोई दया *नहीं* की जाएगी।

पश्चाताप न करने वाले के दण्ड को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता: ''वह ... पवित्र स्वर्गदूतों के सामने, और मेमने के सामने आग और गन्धक[35] की पीड़ा में पड़ेगा।'' (14:10ख)। आग और गन्धक का रूपक सदोम और अमोरा के विनाश से लिया गया है (उत्पत्ति 19:24; देखें यहूदा 7)। स्वर्गदूतों और यीशु ''के सामने'' सताए जाने का रूपक दण्ड पाने वालों के अपमान का चित्रण है।[36] विश्वासी मसीहियों को ताने मारने वाली और कठोर मन भीड़ के सामने सताया गया था। वैसे ही प्रभु के साथ न होने वालों ने पवित्र सभा के सामने सताया जाना था।[37]

यूहन्ना ने आगे कहा, ''और उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो

उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा'' (आयत 11)। परमेश्वर की आराधना करने वाले के जलने का धुआं कुछ मिनटों के लिए ऊपर उठा और फिर खत्म हो गया ''और उसने अपने आप को परमेश्वर के साथ संगति में अनन्त जीवन पाए हुए देखा।''[38] दूसरी ओर पशु की पूजा करने वालों का धुआं ''युगानुयुग'' उठता रहेगा। उन्हें पीड़ा, असहनीय पीड़ा के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा।[39]

दो टीकाओं में, जिनकी सहायता मैंने ली, आयत 10 और 11 को ''उप-मसीही'' कहा गया। अन्यों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ये आयतें यीशु के अनुकूल नहीं हैं, ''जिसने सबसे प्रेम करना सिखाया।'' स्पष्टतया इन लेखकों को पता नहीं है कि नये नियम के किसी भी अन्य वक्ता या लेखक से अधिक सनातन दण्ड के बारे में मसीह ने ही कहा है। इस विषय पर यीशु की कुछ स्पष्ट टिप्पणियां इस प्रकार हैं:[40]

> जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना। पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है (मत्ती 10:28)।
>
> और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है,[41] कि दो आंखें रहते हुए तू नरक में डाला जाए। जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती (मरकुस 9:47, 48; आयतें 43-46 भी देखें)।
>
> तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे श्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। ... और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:41-46)।

एक रविवार एक प्रचारक ने दुष्टों को दिए जाने वाले दण्ड पर संदेश दिया। अगली सुबह एक जवान उसके अध्ययन में आया और लड़ते हुए कहने लगा, ''मुझे लगा कि आपको पता होना चाहिए कि मैं कल की आपकी एक बात से सहमत नहीं हूं।''

सेवक ने पूछा, ''वह कौन सी बात है?''

''आपने कहा था कि अधर्मी लोग अनन्त विनाश में जाएंगे, जबकि मैं नहीं मानता कि वे जाएंगे!''

प्रचारक ने कहा, ''अच्छा, तो बस इतनी सी बात है? यदि आप मत्ती 25:46 पढ़ें तो पाएंगे कि आप मेरे साथ असहमत बिल्कुल नहीं हैं, आप तो यीशु मसीह के साथ असहमत हैं। मेरी सलाह है कि आप अभी घर जाएं और उससे सुलह कर लें।''[42]

तीसरे स्वर्गदूत के काम पूरा कर लेने के बाद यूहन्ना ने परमेश्वर की प्रेरणा से टिप्पणी जोड़ी: ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु

पर विश्वास रखते हैं'' (आयत 12)।[43] यह जानते हुए कि परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा, मसीही लोगों को चलते रहने का हियाव मिलता है। परन्तु ध्यान दें कि धीरज *कौन* रख सकेगा: वही ''जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं।''[44] हम में से कोई भी सिद्ध जीवन नहीं जी सकता, परन्तु यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ रहे और हमें सामर्थ दें तो हमें अपनी पूरी कोशिश करनी आवश्यक है! परमेश्वर उन्हें ही आशीष देता है, जो विश्वास में बने रहते हैं और जो उसकी इच्छा पूरी करने को समर्पित हैं।

विश्वासी रहने वालों का भविष्य (आयत 13)

कई संदेश सुनाने वाले सबसे बढ़िया बात अन्त तक के लिए रख छोड़ते हैं और यही बात आकाश के बीच से दिए जाने वाले संदेश में हुई: तीसरे स्वर्गदूत के अपना काम पूरा कर लेने के बाद यूहन्ना ने ''स्वर्ग से यह शब्द सुना,[45] कि लिख;[46] जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं,[47] आत्मा कहता है, हां[48] क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उन के कार्य उन के साथ हो लेते हैं''[49] (आयत 13)।

यह प्रकाशितवाक्य में धन्य वचनों में से दूसरा[50] है, और पुस्तक की सबसे अधिक शांतिदायक बातों में से कुछ इसी में हैं। इस आयत ने सदियों से लाखों शोक करने वालों को तसल्ली दी है। यदि आपको यह आयत पहले याद नहीं थी तो अब याद कर लें।

मैंने ऐसे मसीही ईमानदारों के जनाज़ों में प्रचार किया है, जिन्हें अपने जीवनभर कठिन काम करना पड़ा था, जिनके अन्तिम दिन बड़े ही पीड़ादायक बीते थे, जो कई बीमारियों से ग्रस्त थे। प्रकाशितवाक्य 14:13 आमतौर पर उनके लिए उपयुक्त नहीं लगता। इन विश्वासियों के लिए मृत्यु तो इस प्रकार आशीष थी, जैसे अन्त में उन्हें विश्राम मिल गया हो।

मैं आमतौर पर इस बात पर ज़ोर देता हूं कि यह आयत मरने वाले हर व्यक्ति से बात नहीं , बल्कि केवल ''प्रभु में'' मरने वालों से प्रतिज्ञा करती है। सुसमाचार की आज्ञा मानने पर हमें ''मसीह में बपतिस्मा'' दिया जाता है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27 भी देखें)। मसीह में ''हम नई सृष्टि हैं'' 2 कुरिन्थियां 5:17; ''मसीह में'' हम परमेश्वर के पुत्र हैं (गलातियों 3:26); ''मसीह में'' हमें हर प्रकार की आत्मिक आशीष से संतान मिलती है (इफिसियों 1:3)। ''मसीह में'' वाक्यांश विशेष सम्बन्ध को दर्शाता है, जो मसीह में होने पर उसके साथ हमारा होता है और वह हम में होता है (कुलुस्सियों 1:27, 28)।

परन्तु उस सम्बन्ध में न बनना चुनना चाहें तो हम चुन सकते हैं। अपनी सांसारिक सेवकाई के अन्त के निकट, यीशु ने अपने चेलों को यह चुनौती दी:

> तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर

> सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फैंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं (यूहन्ना 15:4-6)।

''प्रभु में'' मरने वाले लोग वे हैं, जिन्होंने पहले तो उसमें बपतिस्मा लिया और फिर मरने तक मसीह में ''बने रहते'' हैं (देखें प्रकाशितवाक्य 2:10)। उनकी मृत्यु आशीषित है, क्योंकि वे ''परमेश्वर के लोगों के लिए'' ठहराए ''सब्त के विश्राम'' में प्रवेश करते हैं, (इब्रानियों 4:9)। उनकी मृत्यु ''परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है'' (भजन संहिता 116:15)।

प्रकाशितवाक्य 14:13 से हमें सामान्य प्रासंगिकता मिल सकती है, परन्तु यूहन्ना के पाठकों के लिए इसका विशेष अर्थ है: ''यूनानी शब्द के अनुवाद 'परिश्रम' का अर्थ चूर होने तक परिश्रम करना है। पशु द्वारा उन्हें दिए जाने वाले कष्टों ने पवित्र लोगों को चूर-चूर कर दिया था।''[51] ''प्रभु में'' मरने का अर्थ यह है कि मरने के समय वे अभी भी उसके विश्वासयोग्य थे, जो उनके लिए मरा था। ''विश्राम के लिए शब्द का ... मूल अर्थ 'वे ताज़गी पाएंगे' है।''[52] इस प्रकार इस आयत से यह संकेत मिला कि मरने वाले मसीही लोगों को अर्थात उन मसीही लोगों, जिन्होंने पशु के दबावों से डरने और बाबुल के आकर्षण में झुकने से इनकार कर दिया था, अन्त में उन्हें पशु और उसके अनुयायियों द्वारा उनके ऊपर लादी गई पीड़ा और कष्ट से छुटकारा मिला। उनके मनों को प्रभु के सामने ताज़गी मिल गई थी। कितना फर्क है! इस जीवन के बाद पशु की मानने वालों को ''रात-दिन चैन नहीं'' मिलता (आयत 11), जबकि प्रभु की मानने वाले ''अपने सारे परिश्रम से विश्राम'' पाते हैं (आयत 13)।

पूरे अध्याय 14 में एक पसन्द चुनने के लिए दी गई है। वास्तव में पाठक को बताया जा रहा है कि ''आप कुछ दिनों के लिए शांति भरा जीवन चुन सकते हैं, जिसके बाद अनन्त काल तक नरक में रहना होगा; या आप कुछ दिनों का कष्ट चुन सकते हैं, जिसके बाद अनन्तकाल तक स्वर्ग में रहना मिलेगा।'' उस रात को देखें तो यह पसन्द चुनना कठिन नहीं था, परन्तु अफसोस की बात है कि लोग आंखें बन्द करके तुरन्त भविष्य को ही पसन्द करते हैं।

यह बात कि आत्मा ने यह पसन्द इतनी स्पष्ट बता दी है कि हमें बताती है कि प्रभु ने इस बात को समझा कि उसके लोगों के लिए विश्वासी रहना कितना कठिन होगा। उसे मालूम था कि अपमान, पीड़ा और अपने और अपने परिवारों की मृत्यु से बचने के लिए उसका इनकार करने की परीक्षा उन पर आएगी। प्रभु को मालूम है कि उसके लोगों पर आज भी पथरीले और सही मार्ग के बजाय उस मार्ग में चलने की परीक्षा आती है जो चमकीला और मुलायम लगता है। वास्तव में वह आज भी समझाता है, ''दूर तक नजर मारो।''

सारांश

द्वितीय विश्वयुद्ध के सबसे यादगारी दिनों में से एक डी-डे[53] अर्थात जून 6, 1944 का वह दिन था, जिस दिन नारमेंडी के संयुक्त आक्रमण से यूरोप को स्वतन्त्र कराने की अन्तिम बात हुई। आपके जीवन के सबसे यादगारी दिनों में आपका ''डी-डे'' अर्थात *decision* day यानी निर्णय लेने का दिन है, जब आप पाप के बन्धन से छूटते हैं, जब आप प्रभु को अपना जीवन देने का निर्णय लेते हैं।

हमारे अध्ययन से यह साफ हो गया है कि केवल दो ही सम्भावित विकल्प हैं कि हम शैतान के लिए जीने का निर्णय लेकर अनन्तकाल वहां बिताएं, जहां वह बिताएगा (20:10), या हम प्रभु के साथ रहने और अनन्तकाल उसके साथ बिताने का निर्णय ले सकते हैं (21:3)। परमेश्वर हमें उसे चुनने को विवश नहीं करता। वह हमें अनुग्रह देने की पेशकश करता है, हम चाहें तो उसे स्वीकार कर लें चाहें तो ठुकरा दें। हम अपनी पसन्द चुनकर परिणाम खुद बनाते हैं।

1829 में जॉर्ज विलसन को डाक लूटने और हत्या के लिए फांसी की सजा दी गई। राष्ट्रपति एंड्रियू जैक्सन ने उसे क्षमा कर दिया, परन्तु विल्सन ने क्षमा लेने से इनकार करते हुए ज़ोर दिया कि जब तक वह उसे स्वीकार नहीं करता, तब तक यह क्षमा नहीं थी। यह एक कानूनी प्रश्न था, जो अमेरिका में पहले कभी नहीं उठा था। मामला सर्वोच्च न्यायालय में गया, जहां प्रधान न्यायाधीश जॉन मार्शल ने यह निर्णय दिया:

> क्षमा कागज़ का टुकड़ा है, जिसका मूल्य क्षमा पाने वाले व्यक्ति द्वारा इसे ग्रहण करने पर निर्भर है। यह मानना कठिन है कि मृत्युदण्ड पाने वाला व्यक्ति क्षमा पाने से इनकार करेगा परन्तु यदि वह इनकार करता है तो यह क्षमा नहीं है। जॉर्ज विल्सन को फांसी दी जाए।[54]

आज परमेश्वर आपको क्षमा देना चाह रहा है। आप विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा उसे स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु इसे मानने के लिए आपसे ज़बर्दस्ती नहीं की जाएगी। मानना या न मानना आपकी मर्जी। पर इतना याद रखें कि आपको समझ होनी चाहिए कि इसके परिणाम क्या होंगे।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के साथ इस्तेमाल करने के लिए आप चाहें तो ''निर्णय लेने का समय'' शीर्षक से चार्ट तैयार कर सकते हैं। इस चार्ट में दो विकल्पों में तुलना की जाएगी। ऊपर ''इस जीवन में'' होगा। चार्ट में यह दिखाया जाएगा कि इस जीवन में पशु की पूजा करने वालों के साथ प्राथमिकता वाला व्यवहार होता है, जबकि परमेश्वर की अराधना करने वाले लोग सताए जाते हैं। फिर चार्ट में ''आने वाला जीवन'' हो सकता है। और सच्चाइयों के अलावा चार्ट में यह जोर दिया जा सकता है कि आने वाले जीवन में पशु की पूजा करने

वालों को चैन नहीं मिलेगा, जबकि परमेश्वर की अराधना करने वाले अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे।

यदि आप में कलात्मक योग्यता है तो आप इसी अंतर पर जोर देने के लिए तस्वीर बना सकते हैं: आरंभ में तस्वीर के भाग को ढक लें और केवल इस जीवन वाला भाग ही दिखाएं। फिर शेष तस्वीर लिए गए निर्णयों के दीर्घकालिक परिणामों को दिखाते हुए, उस पर से पर्दा हटाया जा सकता है।

इन वचनों का इस्तेमाल इवैंजलिज्म अर्थात सुसमाचार प्रचार पर संदेश देने के लिए (खोए हुए संसार में स्वर्ग दूतों द्वारा घोषणा करने के आदेश से लेते हुए) इस्तेमाल किया जा सकता है। यहां वचन में हमें सुसमाचार प्रचार के लिए तीन मजबूत उद्देश्य मिलते हैं: (1) पहला स्वर्गदूत: परमेश्वर को खोए हुओं की चिंता है, हमें भी होनी चाहिए। (2) दूसरा स्वर्गदूत: यदि हमारे मित्र और पड़ोसी परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ते, तो उनका गिरना निश्चित है। (3) तीसरा स्वर्गदूत: हमारे मित्रों की पसंद से उनका अनंतकाल तय होगा; उन्हें सही पसंद चुनने के लिए प्रोत्साहित करें। इस प्रवचन का अच्छा शीर्षक ''प्रभु के आतंक को जानना'' हो सकता है।

खोज करते हुए मेरे ध्यान में कुछ और वैकल्पिक शीर्षक आए: ''परमेश्वर का अंतिम वचन है''; ''अनुग्रह, विनाश और चेतावनी के स्वर्गरूप''; ''दर्शनों और न्याय के स्वर''; ''दिलेर करने वाला वचन''; ''स्वर्गदूतों की घोषनाएं''; ''अच्छी खबर, बुरी खबर''; ''सुनो, सुनो!''

टिप्पणियां

[1]अध्याय 14 के तीन भागों पर कालक्रम के अनुसार विचार करना आवश्यक नहीं है। तीनों भाग एक ही विषय अर्थात ''अंत में परमेश्वर के लोग विजयी होंगे'' के तीन अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करते हैं। यदि आप तीनों भागों को समय में एक को दूसरे के पीछे बनाना चाहते हैं, तो आपको 1,44,000 को *यूहन्ना* के समय में विश्वासियों के रूप में दिखाना पड़ेगा न कि हर युग के विश्वासियों के रूप में। [2]''बीच हवा में पुलपिट'' का विचार यूजीन पीटरसन से लिया गया, जिसने ''सरमन फ्रॉम ए पुलपिट इन मिड-हैवन'' (*रिवसर्ड थंडर* [सेन फ्रांसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988], 128) का हवाला दिया। [3]मीकाईल के स्वर्गदूतों के अलावा (12:7), प्रभु का अंतिम स्वर्गदूत जिसका नाम दिया गया सातवीं तुरही बजाने वाला स्वर्गदूत था (11:15) जिसे 14:6 से निकाल दिया गया। [4] KJV में ''*the* everlasting gospel'' है। हस्तलिपि का प्रमाण ''the'' के बजाय ''an'' का समर्थन करता है, परन्तु अनिश्चित उपपद ''an'' का कोई महत्व नहीं है। पौलुस ने रोमियों 1:1 में ''gospel'' शब्द से पहले (''the'') निश्चयात्मक उपपद का इस्तेमाल नहीं किया। [5]कई लोग यह सिखाते हैं कि द्वितीय आगमन का समय निकट आने पर, स्वर्गदूत स्वयं व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार का प्रचार करेंगे। यह आयत ऐसी अवधारणा की शिक्षा *नहीं* देती क्योंकि यह *तो दर्शन* था। परमेश्वर ने सुसमाचार सुनाने की ज़िम्मेदारी *मनुष्यों* को दी न कि स्वर्गदूतों को (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; देखें 2 कुरिन्थियों 4:7)। [6]यूनानी शब्द के अनुवाद ''सुसमाचार'' का क्रिया रूप 10:7 में मिलता है *(ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''बड़े संदेश वाली छोटी किताब'' में 10:7 पर नोट्स देखें), परन्तु केवल यहीं पर संज्ञा रूप मिलता है। [7]यूनानी शब्द के अनुवाद ''सुसमाचार'' का इस्तेमाल सामान्य अर्थ

में किसी भी प्रकार की ''अच्छी खबर'' के लिए इस्तेमाल किया जा *सकता* है, परन्तु पहले स्वर्गदूत का संदेश ''सामान्य शुभ समाचार'' बड़ी मुश्किल से बनता है। परन्तु यह परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा प्रचार करने वालों की ओर से सुसमाचार का एक पहलू दिखाता है। यह हमें यह विश्वास करने का तर्क देता है कि यह कोई ''अलग सुसमाचार'' नहीं है। (देखें 2 कुरिन्थियों 11:14 और गलातियों 1:6, 7.)यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि यह *सुसमाचार* से हटकर कुछ है। [8]मायर पर्लमैन, *विंडो इन टू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941),131. [9]लेटर डे सेंट्स वालों की शिक्षा है कि प्रकाशितवाक्य 14:6, 7 स्वर्गदूत के कुछ पट्टियां जमा कराते हुए, जो छपने के लिए मौरमन शिक्षा के निर्माता जोसेफ स्मिथ को मिली और उनका अर्थ किया गया, अमेरिका के न्यूयार्क राज्य के ऊपर से उड़ने का विवरण है। परन्तु नया नियम सिखाता है कि प्रेरितों को दिया गया प्रकाशन संपूर्ण था (यूहन्ना 16:13; 2 पतरस 1:3; यहूदा 3)। सब कथित ''लेटर डे प्रकाशन'' वचन में जोड़ने के दोषी हैं (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। [10]जे. डब्ल्यू रॉबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 119.

[11]ओवन एल. क्राऊच *एक्सपोज़िटरी प्रीचिंग एण्ड टीचिंग: रैवलेशन* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 259. [12]जैसा कि पहले कहा गया था कि ''पृथ्वी के लोग'' (या इसके जैसे) अविश्वासियों को कहा गया है, जबकि ''हर एक जाति और कुल और भाषा,'' ''सब'' को। [13]स्वर्गदूत हवा में उड़ा ताकि सब उसे देख सकें, और उसने ऊंचे स्वर से बात की ताकि सब उसे सुन सकें। [14]10:6 में परमेश्वर के विवरण के लिए लगभग आम इस्तेमाल वाले शब्दों का इस्तेमाल किया गया। 14:7 में दी गई अपील लुस्तरा में मूर्तिपूजक श्रोताओं को दी गई अपील जैसी थी (प्रेरितों 14:15)। 14:7 में यह संकेत हो सकता है कि लोग सच्चे परमेश्वर को उसके बनाए संसार से जान लें (देखें रोमियों 1:18-21)। [15]''समय'' सही अर्थात उपयुक्त समय बताने के लिए यूहन्ना प्रेरित द्वारा इस्तेमाल किया गया विशेष शब्द है। [16]मैं नहीं चाहता कि मुझे गलत समझा जाए। लोग खोते इसलिए हैं क्योंकि वे सुसमाचार को नकार देते हैं। यदि ऐसा होता तो बेहतर यही होगा कि लोगों को सुसमाचार सुनाया ही न जाए; जिससे उन्हें इसे ठुकराने का अवसर ही नहीं मिलेगा। मनुष्यजाति यीशु के आने से बहुत *पहले* खोई हुई थी, *इसी कारण* उसे आना पड़ा। साथ ही, सुसमाचार को मानने का अवसर मिलने के बाद उसे ठुकराने की बात विशेष रूप से कुछ अशुभ लगती है! [17]थॉमस एफ. टॉरेंस, *द अपोकलिप्स टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 96. [18]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस कं., 1969), 71. [19]रूबल शैली, *द लैंब एंड हिज़ एनिमी: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन फाउंडेशन, 1983), 87. [20]''गिर पड़ा'' को दोहराना बात पर ज़ोर देने के लिए है, जिसमें विशेषकर यह पहले बताई घटना की *निश्चितता* पर ज़ोर देता है।

[21]बड़ा बाबुल पर चर्चा के लिए ''*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 4'' के पाठ ''जब बाबुल आप को फुसलाने की कोशिश करे'' में देखें। [22]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1977), 273. [23]अलबर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्राम रैवलेशन: टाइमली मैसेज फ़ॉर ट्रबल्ड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 79. [24]KJV में ''नगर'' है। हस्तलिपि का प्रमाण इस आयत में ''नगर'' शब्द का समर्थन नहीं करता; किन्तु 17:18 में बाबुल को ''वह बड़ा नगर जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' कहा गया है। [25]अनुवादित शब्द ''व्यभिचार'' का अनुवाद आमतौर पर ''fornication'' होता है (देखें KJV)। [26]अनुवादित शब्द ''कोपमय'' का इस्तेमाल ''व्यभिचार'' (देखें KJV) के लिए है। [27]हमने अपने अध्ययन में कई बार ध्यान दिया है कि यूहन्ना के समय में ''बाबुल'' सर्वप्रथम और सबसे बढ़कर रोम नगर का ही प्रतीक है (17:9, 18); परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, वह इससे भी *अधिक* का प्रतीक है। [28] बाबुल के गिरने का विवरण अध्याय 18 में है। [29]यशायाह ने प्राचीन बाबुल के गिरने की बात कहते हुए यही किया था; उसने इस घटना को ऐसे कहा था जैसे यह पहले ही हो चुकी हो (यशायाह 21:9)। इस अलंकार को ''प्रोलैप्सिस'' कहा जाता है। [30]द सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस, 5 मई 1991 को दिया गया जॉन रिस्से

का संदेश, ''एविल बीस्ट एंड द विक्टोरियस लैंब।''

[31]''अच्छी खबर, बुरी खबर'' का विषय मेरे साथ घटा था, परन्तु रॉबर्ट मुल्होलैंड ने एक तीसरी बात जोड़ी जो मुझे पसंद आई: ''यू चूज़'' (एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड जूनि, *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एस्बरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस, ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990], 244)। [32]आयत 9 में विकल्प का संकेत देते हुए ''यदि'' जोड़ा गया है। [33]क्रोध का कटोरा पीना दंड के लिए बाइबल का सामान्य रूपक है (यशायाह 51:17; यिर्मयाह 25:15; भजन संहिता 75:8; मत्ती 20:22; 26:39 भी देखें)। [34]कइयों का विचार है कि ''कोपमय'' मदिरा का हवाला (कुछ अनुवादों में ''बिना मिलावट'' या ''बिन पानी'' है) यूहन्ना के समय में दाखरस में पानी मिलाने की प्रथा का संकेत है। आमतौर पर एक भाग दाखरस में छह भाग पानी मिलाया जाता था। [35]गन्धक पर और जानकारी के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 3'' के पाठ ''नरक का पूर्व स्वाद'' में 9:17, 18 पर टिप्पणियां देखें। [36]आमतौर पर दण्ड की पीड़ा दूसरों के सामने दिए जाने पर अधिक ही लगती है। (उदाहरण के लिए, बच्चों को दूसरों के सामने डांट खाना अच्छा नहीं लगता।) यीशु ने कहा कि जो उसका इनकार करते हैं। स्वर्गदूतों के सामने वह भी उनका इनकार करेगा (लूका 12:9; देखें मरकुस 8:38)। इस आयत में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि दुष्टों को मिलने वाले दण्ड पर यीशु और स्वर्गदूत घूरेंगे, जिसका कई लोग सुझाव देते हैं। [37]कई इस बात पर ज़ोर देते हैं कि यीशु के सामने दण्ड दिया जाना यह प्रमाण है कि 14:9-11 पाप के *अनन्तकालिक* दण्ड की बात नहीं है, क्योंकि अनन्तकाल का दण्ड परमेश्वर की उपस्थित *से* दूर होगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9; प्रकाशितवाक्य 21:27; 22:14, 15 भी देखें)। यह सही हो सकता है, परन्तु 14:11 निश्चित रूप से अनन्तकालिक दण्ड *जैसा लगता* है। याद रखें कि यह एक *दर्शन* है। यदि यह अनन्तकालिक दण्ड की बात नहीं है तो यह कम से कम वैसा अवश्य है। [38]रेअ समर्स, *वर्धी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 181. [39]अनन्तकालिक दण्ड पर और जानकारी के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य 5'' में 19:20 पर टिप्पणियों के साथ 20:10, 14, 15 पर नोट्स देखें। [40]मत्ती 25:30; लूका 16:23 भी देखें। क्या कोई यीशु को ''उप-मसीही'' कहने का साहस करेगा।

[41]यीशु शरीर को बिगाड़ने के लिए नहीं कह रहा था, जो कि परमेश्वर का मन्दिर है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। बल्कि वह अपने जीवनों से ऐसी किसी भी चीज़ को निकालने की आवश्यकता बता रहा था जो हमारे नाश का कारण बन सकती है। [42]यह उदाहरण डेविड एफ.बर्गेस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कॉनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 99 से लिया गया था। [43]यह 13:10 के अन्त के वाक्यांश का दोहराव और विस्तार है। NASB में अक्षरश: अनुवाद है: ''Here is a call for perseverance''; ''यह धीरज रखने की पुकार है।'' वाक्यांश का अनुवाद जैसे भी हो यह विश्वासियों को प्रोत्साहित करने के लिए था। इस पुस्तक में पहले आए 13:10 पर नोट्स देखें। [44]इन शब्दों के लिखे जाने के समय, शब्दों का यह विशेष अर्थ होगा: ''जो *राजा की आज्ञाओं के बजाय* परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है, और *जो राजा की मूर्ति के सामने यीशु का इनकार करने के बजाय* यीशु में अपने विश्वास को बनाए रखता है।'' [45]वक्ता की पहचान नहीं बताई गई, परन्तु हम यह मान लेते हैं कि वह परमेश्वर था या परमेश्वर की ओर से बोलने वाला कोई। [46]यूहन्ना को कुछ बातें लिखने के लिए (1: 11, 19; 2: 1, 8, 12, 18; 3:1, 7,14) और कुछ न लिखने के लिए कहा गया था (10:4)। जब भी ''लिख'' की आज्ञा मिलती है, उसमें यही संकेत होता है कि उसके अगली बात विशेष महत्व वाली है (19:9; 21:5 भी देखें)। [47]अनुवादित वाक्यांश ''अब से'' से वचन से जुड़ी कुछ कठिनाइयां आती हैं। उदाहरण के लिए कुछ सवाल हैं कि यह वाक्यांश वाक्य में कहां आना चाहिए और इससे क्या सुधार होता है। (कई आधुनिक अनुवादों की तुलना करें।) सम्भवतया मुख्य बात जो कही जानी चाहिए, वह यह है कि वाक्यांश का अर्थ यह *नहीं* है कि जो आयत 13 की प्रतिज्ञा से पहले प्रभु में मर गए वे ही आशीष पाएंगे। यह वाक्यांश तो केवल ज़ोरदार ढंग से पुष्टि है कि भविष्य में कष्ट उठाने वाले सब लोगों को चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे धन्य *होंगे*। [48]यह ज़ोर देकर पुष्टि करना है। जहां मैं रहता हूं वहां एक वाक्यांश का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे यह पता चलता है कि यह विचार ''हां, सचमुच!'' है। [49]यहां शिक्षा यह है कि परमेश्वर उसकी सेवा में या उसके

काम के कारण उनके कष्ट को भूलता नहीं है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:58)। ठंडे पानी का एक कटोरा पिलाना भी भुलाया नहीं जाएगा (मत्ती 10:42)! [50]प्रकाशितवाक्य में पहले धन्य वचन के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकशितवाक्य, 1'' में पृष्ठ 81-82 पर 1:3 पर नोट्स देखें.

[51]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग क., 1972), 198. 2:2 में इसी यूनानी शब्द का अनुवाद ''परिश्रम'' हुआ है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 126 पर 2:2 पर नोट्स देखें। [52]समर्स, 182 ''विश्राम'' का अर्थ ''काम से छुट्टी'' नहीं बल्कि ताज़गी पाना है। स्वर्ग में भी हम परमेश्वर की सेवा करेंगे। [53]डी-डे किसी गुप्त तिथि के लिए, जिसमें कोई सैनिक कार्रवाई आरम्भ होनी हो सामान्य सैनिक शब्द है (''D'' से "date unknown" अर्थात अज्ञात तिथि)। डी-डे के लिए नारमेंडी, फ्रांस पर आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है आमतौर पर अब यह शब्द उसी अवसर के लिए इस्तेमाल होता है। [54]बर्गेस, 177 में उद्धृत।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. ''सुसमाचार'' शब्द का क्या अर्थ है? किस अर्थ में पहले स्वर्गदूत का संदेश ''अच्छी खबर'' था?
2. बाबुल के प्राचीन नगर के बारे में बाइबल की शिक्षा की समीक्षा करें। मैसोपोटामिया के उस नगर की कुछ विशेषताएं कौन सी थीं, जो ''बड़े नगर बाबुल'' से मिलती-जुलती थीं?
3. अजगर के तीन सहयोगियों (जिनका परिचय अध्याय 13 और 14 में दिया गया है) के बारे में बताएं और यह कि उनमें से प्रत्येक हम से परमेश्वर की आज्ञा तुड़वाने की कोशिश कैसे करता है?
4. दूसरे स्वर्गदूत ने इसके गिरने से पहले ही क्यों कहा, ''गिर पड़ा, बाबुल गिर पड़ा''?
5. पशु की पूजा करने के लघुकाल या थोड़ी देर के परिणाम क्या थे? पशु की पूजा करने से इनकार करने के थोड़ी देर के परिणाम क्या थे?
6. पशु की पूजा करने के दीर्घकालिक परिणाम क्या थे? प्रभु के विश्वासी रहने के दीर्घकालिक परिणाम क्या हैं?
7. दुष्टों को दिए जाने वाले दण्ड के बारे में बाइबल क्या कहती है? इन शब्दों पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?
8. ''प्रभु में'' वाक्यांश का क्या अर्थ है? ''प्रभु में मरना'' का क्या अर्थ है?
9. ''प्रभु में मरने'' वालों को कैसे आशीष मिलती है?
10. क्या 14:13 में ''विश्राम'' शब्द का अर्थ ''काम से छुट्टी'' है? स्वर्ग में ''विश्राम'' हमें कैसे मिलेगा?
11. प्रभु से *बाहर* के अर्थ की समीक्षा करें और प्रभु *में* मरने का अर्थ बताएं। आप इनमें से क्या करना चाहते हैं?

पहला स्वर्गदूत, आकाश के बीच उड़ते हुए (14:6, 8, 9)